B.A Part-2 Paper-3 Group A (Research Methodology) by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur) 30.05.2020

Case Study Method

इस विधि में किसी सामाजिक इकाई जो एक व्यक्ति भी हो सकता है या कोई अन्य सामाजिक समूह भी हो सकता है, के एकात्मक स्वरूप को बनाए रखते हुए उसका अध्ययन किया जाता है। केस अध्ययन विधि का प्रयोग मनोविज्ञान, शिक्षा तथा समाजशास्त्र के क्षेत्र में बहुत पहले से किया जाता है। सामाजिक शोध में इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग Frederic le play (1840) में पारिवारिक बजट के अध्ययन में किया।

इस विधि में किसी भी सामाजिक इकाई का अध्ययन उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर किया जाता है। सामाजिक इकाई एक व्यक्ति, समूह या संस्कृति कुछ भी हो सकता है। केस अध्ययन विधि में सामाजिक इकाई के एकात्मक स्वरूप को बनाए रखा जाता है अर्थात उसका अध्ययन उप-इकाई में न बांट कर पूर्ण रूप से किया जाता है।

केस अध्ययन विधि के मुख्य दो प्रकार हैं –

- अपसरित केस विश्लेषण (Deviant case analysis)-इस प्रकार के केस में अध्ययनकर्ता ऐसे दो केसेज लेता है जिनमें समानता होते हुए भी भिन्नता होती है, जैसे- दो जुड़वा बच्चे जिनमें से एक असामान्य व्यवहार से पीड़ित

है तथा दूसरा सामान्य है। इस प्रकार दोनों बच्चों में समानता के साथ भिन्नता पाई जाती है। इन्हीं भिन्नता के कारणों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रविधि का प्रयोग Warwicla and Osherson द्वारा काफी किया गया।

- पृथक नैदानिक के विश्लेषण (Isolated clinical case analysis) - इस प्रकार के केस विश्लेषण में अनुसंधानकर्ता व्यक्ति की इकाइयों का विश्लेषण उसके विश्लेषणात्मक समस्याओं के आधार पर करता है। इस प्रकार की विधि का प्रयोग मनोविश्लेषण के अंतर्गत सबसे अधिक किया गया।

केस अध्ययन विधि के दोनों ही प्रकार अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। इस विधि द्वारा केस का

गहन तथा तुलनात्मक अध्ययन संभव हो पाता है, लेकिन इन गुणों के साथ-साथ इस विधि में आत्मनिष्ठता, उपलब्ध सूचनाओं में विश्वसनीयता का अभाव, भ्रामक परिणाम जैसी खामियां भी हैं।